# "हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन"

**डा. संजय कुमार,**
**सहायक प्राध्यापक, रामलाल आनन्द महाविद्यालय,**
**दिल्ली विश्वविद्यालय**

हरियाणा प्रदेश की अपनी एक अनूठी पहचान एवं संस्कृति है। हरियाणा के लिए कहा भी जाता है – "देश में प्रदेश हरियाणा, जित दूध दही का खाणा या म्हारा नंबर वन हरियाणा। हरियाणा राज्य भारत का छोटा सा प्रदेश है किंतु अपने खान पान संस्कृति एवं लोकगीतों की वजह से अनूठी पहचान बनाए हुए हैं। लोकगीत किसी भी प्रदेश की संस्कृति को पहचान दिलाने में विशेष भूमिका निभाते हैं। लोकगीतों से ही वहां के लोगों के संस्कारों का पता लगता है। लोकगीत को अंग्रेजी भाषा में Folk song कहा जाता है। लोकगीतों को बढ़ावा देने के लिए आजकल विशेष कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है ताकि प्रदेश से जुड़ी हुई संस्कृति जीवित रहे। क्षेत्रीय युवा महोत्सव इस बात का प्रमाण है। लोक साहित्य में लोकगीतों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। लोकगीत लोक विषयक होते हैं इनमें लोक जीवन की झांकियां रहती हैं। उनमें जीवन से संबंधित हर पहलु को दर्शाया जाता है चाहे वह जन्म से जुड़े हो या विवाह से, समस्त जन मानस एकाकार होकर उत्सव आदि प्रसंगों पर सहज, सरल व भावपूर्ण रीति से लोकगीतों को गाता है। लोकगीतों के द्वारा ही हरियाणा के ग्रामीण समाज के विविध रीति-रिवाजों और पर्वों का पता लगता है एवं जनमानस अपने मनोगत उद्गारों, भावों यथा प्यार, तकरार, हंसी और ठिठोली को प्रकट करता है।

प्रदेश के लोकगीत जनमानस की मनोस्थिति को प्रकट करते हैं और राज्य की संस्कृति को प्रतिबिंबित करते हैं। यहाँ के लोकगीत रस्म, रिवाज और ऋतु से जुड़े हुए हैं। जैसे सावन के गीत, फाल्गुन या होली के गीत, बंदडी, भात, जच्चा, हल्दात, सगाई, लग्न जकड़ी, फेरों एवं विदाई के गीत आदि। इन सभी प्रकार के गीतों में विवाह संबंधी गीत अधिक लोकप्रिय हैं क्योंकि एक नए जीवन का प्रारंभ विवाह से ही होता है।

सावन के महीने का सभी को बड़ा बेसब्री से इंतजार रहता है। इसी महीने में तीज का पर्व आता है। सावन के गीतों में कहीं बहन को कोथुली का इंतजार रहता है तो कहीं सावन की छटा बिखरी होती है। बहनों को भाई का इंतजार कुछ इस प्रकार रहता है-

**बागा माह पपीहा बोल्या, मैं जाणी कोय आवै सै,**

**झूले चढ़के देखन लागी, छोटा वीरा आवै सै।**

बहन भाई की दी हुई कोथुली को प्राप्त करते हुए उसके प्रति अपने दुलार और ममता को भी प्रकट करती है-

**कच्चे नीम की निंबोली सामण कद आवै रे**

**जिओ रे मेरी माँ का जाया गाडे भर कर ल्यावै रे।**

होली का त्यौहार भी हरियाणा में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है यहां देवर-भाभी का होली खेलना भी अनोखे प्रकार का है -

**कामिनी होली खेल रही है देवर जेठ के संग**

**रघुवर होली खेल रहे हैं सीता जी के संग**

लोकगीतों में लोकमानस की आशा विश्वास की झलक भी दिखाई पड़ती है। राधा कृष्ण की होली हर जगह प्रसिद्ध है। हरियाणवी लोकगीत में इसको इस प्रकार दर्शाया गया है -

**आ गए किरसण मुरारी**

**गैल में राधा प्यारी**

**अर गोपी बीसैं सारी**

**मथुरा की कुंज गली में**

**होली खेल गये भगवान।**

फाल्गुन मास ऊर्जा, स्फूर्ति एवं हर्षोल्लास का महीना माना जाता है जहां साजन-सजनी का मस्ताना प्रेम भी झलकता है -

**फागण के दिन चार रे सजनी, फग्गण के दिन चार,**

**मध जोबन आया फागण में,**

**फागण भी आया जोबन में,**

**झाल उठे सै मेरे मन में,**

**जिनका बार न पार री सजनी**

**फागण के दिन चार री सजनी।**

हरियाणा प्रदेश में पति पत्नी की तकरार भी बहुत ही हास्य विनोद से लोकगीतों में प्रकट होती है –

**मैं तो गोरी-गोरी नार बालम काला-काला री**

**मेरे जेठा की बरिये सासड कै खाया था री।**

एक जीजा साली एवं सास-बहू का रिश्ता हरियाणा में ठिठोलियों से भरा हुआ है-

**जीजा मैं गोरी तू काला घणा,**

**जीजा में लंबी तू छोटा घणा।**

हरियाणा प्रदेश की लड़कियां शर्मीली एवं संस्कारी मानी जाती हैं लड़कियां विवाहादि मामलों में अपनी इच्छा प्रकट नहीं करती अपितु तो बड़े-बूढ़ों के ऊपर ही सब कुछ निर्भर होता है फिर भी एक नए जीवन साथी की चाहत उनके मन को गुदगुदा देती है कि वह कैसा होना चाहिए जिसका कुछ इस प्रकार वर्णन किया गया है -

**दादाजी ऐसा वर ढूंढो नंदलाल**

**पेंट कोट टाई वाला**

**पंखा, रेडियो, बिजली वाला**

**कमरे कोठी बैठक वाला।**

जब कन्या के योग्य वर मिल जाता है तो सगाई के उपरांत विवाह की तिथि तय कर दी जाती है और विवाह के अवसर पर सखियां अपनी सहेली के साथ इस प्रकार हठखेलियां करती नजर आती हैं -

**सखि तेरा बन्नडा है चंदे का हुणियार**

**भाणा तेरा बन्नडा है चंदे का हुणियार**

**नाक सुआ सा, मुँह बटवा सा**

**आंख नींबू की फाड़**

**भाणा, तेरा बन्नडा चंदे का हुणियार।**

लज्जा औरत का सबसे बड़ा गहना माना जाता है। हरियाणा की लड़कियां चाहे चाँद की भी सैर कर आई हों किंतु माता-पिता व बड़ों के आगे अब भी शर्माती हैं। लड़की सगाई उपरांत शर्माती है और तत्परता नहीं दिखाती तो उसको यूं कहा जाता है -

**उठो बन्नी सजो जल्दी तुम्हें ससुराल जाना है,**

**तेरे पापा हजारी ने नगर सारा सजाया है**

**तेरे ताऊ हजारी ने नगर सहारा सजाया है**

**तेरी दादी के जीवन में ये शुभ दिन आया है**

**तेरी ताई के जीवन में ये शुभ दिन आया है।**

लड़की अपने बड़ों से आशीर्वाद मांगती हैं तो सभी उसकी झोली आशीष से भरते हुए कहते हैं -

**सुहाग देगा राम जोड़ी हद की बणी**

**सुहाग मागण लाडो अपने ताऊ पे गई**

हरियाणा प्रदेश में भात न्यौतना एवं भात भरना दोनों रिवाजों का विशेष महत्त्व है। अपने बेटे या बेटी की सगाई के बाद बहन भाई के घर भात न्यौतने जाती है और यह गीत गाती है -

**ए मैं न्यौतुंगी वीर मेरा भाई जाया आया**

**ए मैं न्यौत चाचे ताऊ लोग मेरा भाई जाया आया**

**ए मैं न्यौतुंगी बाप मेरे की पोली, मेरा भाई जाया आया।**

भात न्यौतने के बाद बहन भाई की प्रतीक्षा करना आरंभ कर देती है-

**ओ मेरे भैया रघुवीर तू भात सवेरे ल्याइयो**

**मेरे सीस की कलियाँ टिके में रतन जडाइयो।**

चाहे कोई भी प्रदेश हो किसी भी वर्ग का परिवार हो सभी की चाहत एक समान ही होती है कि वर वधू की जोड़ी अनूठी और बेमिसाल हो। ढुकाव का सभी को बेसब्री से इंतजार रहता है चाहे वह वधू हो या सखियां या परिवार -

**बन्नी ने गेर दिया तार बन्ने के लिए**

**जल्दी से आओ भरतार शादी के लिए**

**सखियाँ खड़ी हैं घर के बाहर ढुका के लिए**

**पंडित बैठे हैं आँगन के बीच फैरों के लिए**

**दादा खड़े हैं हाथ जोड़ विदा के लिए।**

ढुकाव के उपरांत फेरों के समय बनड़ा स्त्री समाज से रू-ब-रू होता है और वह उसके साथियों से मजाक करती हैं और यूँ कहती हैं –

**हमने बुलाए सुथरे-सुथरे मुंडे-मुंडे आए पहसेरे**

**हमने बुलाए लंबे-लंबे मोटे-नाटे आये री पहसेरे।**

हरियाणवी संस्कार गीतों में सात फेरों की प्रक्रिया लोकवाणी में अभिव्यक्त की गई है -

**पहला फेरा लीजिए दादी की है पोती**

**दूजा फेरा लीजिए ताऊ की है बेटी**

**तिजा फेरा लीजिए बाबा की है बेटी**

**चौथा फेरा लीजिए काकै की है बेटी**

**पाँचवा फेरा लीजिए मायै की है बेटी**

**छटा फेरा लीजिए नाना की है दोहती**

**सातवाँ फेरा लीजिए लाडो हुई पराई।**

वर की बुद्धि की परीक्षा लेने में भी महिलाएँ कोई कसर नहीं छोड़तीं और फैरों के उपरांत बनडे (वर) से धन्न बुलवाती हैं और उसके ज्ञान को आँकती हैं -

**धन पकैया धन पकैया**

**धन के ऊपर खीरा**

**थारी बेटी ने न्यूँ राखूँ**

**ज्यूँ अँगूठी मैं हीरा।**

सभी प्रकार के हंसी मजाक हास्य विनोद के उपरांत विदाई का समय आता है जो कि पूरी वेला को अश्रुधारा में तब्दील कर देता है और सारी वेला हि बदल जाती है जब माता-पिता अपने कलेजे के टुकड़े को पराया कर देते हैं-

**हुआ नगर सब सूना बन्नौ मेरी पाहुनिया**

**दादीरानी ने ऐसे पाला,**

**जैसे घी की गागरिया रे बाबा**

दूसरी तरफ ससुराल पक्ष बहू की पलकें बिछाकर इंतजार करती हैं कि बहु आवेगी और काम में हाथ बतायेगी-

**"सासू जाणा बहु आव मेरा आधा काम बटाव गी"**

बहू सास की नौक-झोंक भी अलग ही प्रकार की होती है, कुछ खट्टी कुछ मीठी –

**मेरी राम नाम की माला बहुआँ न तोड़ बगाई**

**सांस मेरी मैं राजी बोलिये, माँ-बाप छोड़ के आई**

**बहु ये मैं तन क्यूँकर बोलूँ-क्यूँकर बोलूँ**

**ये मेरी तील ना लाई।**

हरियाणा में बुढ़ापा और जवानी से संबन्धित लोकगीतों का भी अपना विशेष स्थान है। जवानी को जीवन का उगता सूरज और बुढ़ापे को अस्त होता सूरज भी माना जाता है। जवानी सभी को प्रिय लगती है और बुढ़ापा देखकर सभी रोते हैं –

**जवानी आम की डाली रे**

**बुढ़ापा नीम की डाली रे**

**जवानी खेल में खोई रे**

**बुढ़ापा देखकर ही रोई रे।**

हरियाणवी संस्कृति लोकगीतों में समाई हुई है। भारतीय साहित्य की भांति हरियाणवी लोक साहित्य के अंतर्गत लोकगीतों का क्षेत्र अत्यंत समृद्ध व व्यापक है। लोकगीतों की परंपरा अबाध गति से चलती आ रही है। ये लोकगीत अपने समय और परिवेश का प्रतिबिंब तो होते ही हैं साथ ही मानवीय संवेदनाओं व भावनाओं की भी नैसर्गिक अभिव्यक्ति होते हैं।

**<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>:**


1. डॉ. शंकर लाल यादव - *हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य*
2. *प्रतियोगिता साहित्य: हरियाणा एक अध्ययन*
3. डॉ. भीम सिंह मलिक - *हरियाणा के लोकगीत*
4. डॉ. हरि शरण वर्मा - *संस्कार गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि*
5. डॉ. साधुराम शारदा - *हरियाणा के लोकगीत*
6. डॉ. कुलदीप सिंह *लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन*
7. http://www.mharaharyana.com/literature-collection/2/51/haryanvi-lok-geet.html